में; **भरतसत्तम**=हे अर्जुन; **त्यागः**=त्याग; **हि**=निःसन्देह; **पुरुषव्याघ्र**=हे नरशार्दूल; **त्रिविधिः**=तीन प्रकार का; **संप्रकीर्तितः**=कहा जाता है।

### अनुवाद

हे अर्जुन! अब तू त्याग के विषय में मेरे निश्चय को सुन! हे नरोत्तम! शास्त्रों में त्याग तीन प्रकार का बताया गया है।।४।।

### तात्पर्य

त्याग के सम्बन्ध में मतभेद हैं; इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण इस विषय में अपना निर्णय अभिव्यक्त कर रहे हैं, जो अन्तिम और सर्वमान्य है। वेद वस्तुतः श्रीभगवान् के ही विधान हैं। परन्तु यहाँ तो श्रीभगवान् स्वयं उपस्थित हैं; अतः उनके निर्णय को सब प्रकार से अन्तिम मानना चाहिए। श्रीभगवान् के मत में प्रकृति के गुणों के अनुसार त्याग के तीन भेद हैं।

**यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।**
**यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।५।।**

**यज्ञदानतपःकर्म**=यज्ञ, दान और तप आदि कर्म; **न त्याज्यम्**=त्यागने के योग्य नहीं हैं; **कार्यम्**=कर्तव्य हैं; **एव**=निःसन्देह; **तत्**=वह; **यज्ञः**=यज्ञ; **दानम्**=दान; **तपः**=तप; **च**=तथा; **एव**=निश्चित रूप से; **पावनानि**=चित्त की शुद्धि करने वाले हैं; **मनीषिणाम्**=महात्माओं के लिए भी।

### अनुवाद

यज्ञ, तप और दानरूप कर्म का त्याग नहीं करना चाहिए; इन्हें करना निश्चित कर्तव्य है। निःसन्देह यज्ञ, दान और तप आदि महात्माओं को भी शुद्ध करने वाले हैं।।५।।

### तात्पर्य

योगियों का कर्तव्य है कि मानवसमाज के उद्धार के लिए यथायोग्य कर्म करें। ऐसे अनेक शुद्धि-साधन हैं, जिनसे मनुष्य परमार्थ के पथ पर अग्रसर हो सकता है। इन यज्ञों में से विवाह भी एक है। इसी कारण उसे विवाह-यज्ञ कहते हैं। जिज्ञासा हो सकती है कि क्या एक संन्यासी, जिसने अपने पारिवारिक सम्बन्धों का विच्छेद कर दिया है, विवाहयज्ञ को बढ़ावा दे? श्रीभगवान् कहते हैं कि ऐसा कोई यज्ञ त्यागने के योग्य नहीं, जिससे मानवसमाज का हित होता हो। विवाह-यज्ञ का उद्देश्य मन को संयमित और शान्त करना है, जिससे वह पारमार्थिक साधना में तत्पर रह सके। अधिकांश मनुष्यों के लिए यह विवाह-यज्ञ आवश्यक है, अतः संन्यासी भी इसका निषेध न करे। यह सत्य है कि संन्यासी के लिए स्त्री-संग वर्जित है; परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि वह किसी अन्य आश्रम के नवयुवक को भी विवाह न करने दे। सभी शास्त्रविहित यज्ञों का प्रयोजन भगवत्प्राप्ति करना है। अतः प्रारम्भिक अवस्था में उन्हें नहीं त्यागना चाहिए। इसी भाँति दान से हृदय शुद्ध होता है। पूर्ववर्णन के अनुसार, सत्पात्र को दान देना परमार्थ में सहायक है।